एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-49

****

Scanned by CamScanner

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, प्रथम वर्ष

****

प्रथम पत्र

****

तुलसीदास

****

'रामचरितमानस'- अयोध्या काण्ड

****

Scanned by CamScanner

[अयोध्या काण्ड मूल-पाठ व्याख्या/ विश्लेषण (शेष भाग-48 से आगे....)]

दो० - बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात॥ 68॥

हे तात! 'वत्स' कहकर, 'लाल' कहकर, 'रघुपति' कहकर, 'रघुवर' कहकर, मैं फिर कब तुम्हें बुलाकर हृदय से लगाऊँगी और हर्षित होकर तुम्हारे अंगों को देखूँगी!॥ 68॥

लखि सनेह कातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जाइ बखाना॥

यह देखकर कि माता स्नेह के मारे अधीर हो गई हैं और इतनी अधिक व्याकुल हैं कि मुँह से वचन नहीं निकलता, राम ने अनेक

Scanned by CamScanner

प्रकार से उन्हें समझाया। वह समय और स्नेह वर्णन नहीं किया जा सकता।

तब जानकी सासु पग लागी। सुनिअ माय मैं परम अभागी॥
सेवा समय दैअँ बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सफल न कीन्हा॥

तब जानकी सास के पाँव लगीं और बोलीं - हे माता! सुनिए, मैं बड़ी ही अभागिनी हूँ। आपकी सेवा करने के समय दैव ने मुझे वनवास दे दिया। मेरा मनोरथ सफल न किया।

तजब छोभु जनि छाड़िअ छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू॥
सुनिसिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौं बखानी॥

आप क्षोभ का त्याग कर दें, परंतु कृपा न छोड़िएगा। कर्म की गति कठिन है, मुझे भी कुछ दोष नहीं है। सीता के वचन सुनकर

Scanned by CamScanner

सास व्याकुल हो गईं। उनकी दशा को मैं किस प्रकार बखान कर कहूँ!

बारहिं बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥

उन्होंने सीता को बार-बार हृदय से लगाया और धीरज धरकर शिक्षा दी और आशीर्वाद दिया कि जब तक गंगा और यमुना में जल की धारा बहे, तब तक तुम्हारा सुहाग अचल रहे।

दो० - सीतहि सासु आसीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार॥ 69॥

सीता को सास ने अनेकों प्रकार से आशीर्वाद और शिक्षाएँ दीं और वे (सीता) बड़े ही प्रेम से बार-बार चरणकमलों में सिर नवाकर चलीं॥ 69॥

Scanned by CamScanner

समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥

कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥

जब लक्ष्मण ने समाचार पाए, तब वे व्याकुल होकर उदास-मुँह उठ दौड़े। शरीर काँप रहा है, रोमांच हो रहा है, नेत्र आँसुओं से भरे हैं। प्रेम से अत्यंत अधीर होकर उन्होंने राम के चरण पकड़ लिए।

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीन जनु जल तें काढ़े॥

सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृतु सिरान हमारा॥

वे कुछ कह नहीं सकते, खड़े-खड़े देख रहे हैं। (ऐसे दीन हो रहे हैं) मानो जल से निकाले जाने पर मछली दीन हो रही हो। हृदय में यह सोच है कि हे विधाता! क्या होनेवाला है? क्या हमारा सब सुख और पुण्य पूरा हो गया?

Scanned by CamScanner

मो कहुँ काह कहब रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा॥

राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें॥

मुझको रघुनाथ क्या कहेंगे? घर पर रखेंगे या साथ ले चलेंगे? राम ने भाई लक्ष्मण को हाथ जोड़े और शरीर तथा घर सभी से नाता तोड़े हुए खड़े देखा।

बोले बचनु राम नय नागर। सील सनेह सरल सुख सागर॥

तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू॥

तब नीति में निपुण और शील, स्नेह, सरलता और सुख के समुद्र राम वचन बोले - हे तात! परिणाम में होनेवाले आनंद को हृदय में समझकर तुम प्रेमवश अधीर मत होओ।

(शेष अध्ययन व विश्लेषण भाग-50 में....)

Scanned by CamScanner